प्रश्न—पाश्चात्य काव्यशास्त्र के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

प्रश्न—पाश्चात्य आलोचना के क्रमिक विकास का सोदाहरण परिचय दीजिए।

प्रवेश—

सामान्यतया यह माना जाता है। आलोचना का प्रादुर्भाव लक्ष्य ग्रन्थों एवं सरल साहित्य के सृजन के उपरांत होता है परन्तु सर्वदा ऐसा होता हो यह आवश्यक नहीं है और विचारक यही कहते हैं–'कई बार कलाकार विशेष रूप से जागरूक कला-

Scanned with CamScanner

कार···रचना करने से पूर्व अपने मस्तिष्क में एक निश्चित आदर्श की कल्पना कर लेता है और लिखते समय इसके अनुकूल बने रहने का प्रयत्न करता है।' ऐसी दशा में कलाकृति से पूर्व आलोचना का उद्भव सिद्ध होता है और यदि यह कथन कुछ अतिरंजित प्रतीत होता हो, तो भी यह तो मानना ही होगा कि आलोचना का विकास साहित्य निर्माण के साथ-साथ होता रहता है और आलोचना की प्राचीनता प्रतिपादित करते हुये यही कहा जाता है कि 'प्रकृति के प्रांगण में मानव ने जब सर्वप्रथम अनुभव किया कि आज का मौसम कल की अपेक्षा सुन्दर है अथवा यह स्थान से अधिक दुखद है या उससे ऐसे ही कुछ अनुभव प्राप्त किये, उसी दिन आलोचना का उदय हुआ।

इस प्रकार पाश्चात्य आलोचना का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है और हमें पाश्चात्य जगत् में काव्यशास्त्र की समृद्ध परम्परा के दर्शन होते हैं। यद्यपि कुछ विचारक पाश्चात्य आलोचना के इतिहास को उद्भव काल, एवम् अंधकार काल, पुनर्जागरण काल, नव्यशास्त्रवादी काल, स्वच्छन्दतावादी काल एवं आधुनिक काल नामक छह कालों में निम्नलिखित तीन कालखण्डों में विभाजित करना सुविधाजनक होगा—

(1) प्राचीन काल—ई० पू० 5वीं शती से ई० 4वीं शती तक।
(2) मध्य काल—ई० चौथी शती से 15 शती तक।
(3) आधुनिक काल—16वीं शती से अब तक।

अब हम यहाँ उक्त तीन कालखंडों के अंतर्गत विकसित एवं पल्लवित पाश्चात्य आलोचना का संक्षिप्त परिचय देंगे।

(1) प्राचीन काल (ई० पू० पाँचवीं शती से ई० चौथी शती तक)

पाश्चात्य आलोचना का प्राचीनतम रूप—कभी-कभी कतिपय विद्वान अँग्रेजी साहित्य को भी पाश्चात्य साहित्य का सब कुछ या मूल समझने की भूल कर बैठते हैं पर वास्तव में पाश्चात्य साहित्य का मूल प्रामाणिक उद्गम यूनान या ग्रीस है। सत्य तो यह है कि अँग्रेजी साहित्य का इतिहास मुश्किल से सात-आठ सौ वर्ष प्राचीन होगा जबकि पाश्चात्य साहित्य का इतिहास ढाई हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। इस प्रकार प्राचीन पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय चिन्तन का यूनान या ग्रीस ही था और हमें पाश्चात्य आलोचना का प्राचीनतम रूप होमर के महाकाव्य 'इलियड' और 'आडेसी' में मिलता है।

वस्तुतः होमर के समृद्ध काव्य को देखकर यह भी अनुमान किया जाता है कि होमर के पूर्व भी यूनान में साहित्य-सृजन होता रहा है लेकिन होमर के पूर्व की कृतियाँ उपलब्ध नहीं हैं। यहाँ यह भी ध्यान में रखना होगा कि उस युग में होमर के द्वारा रचित महाकाव्यों के अतिरिक्त भी अन्य कई महाकाव्यों की रचना हुयी है। अतएव यहाँ यह कल्पना की जा सकती है कि साहित्य के इस सर्वाधिक सशक्त माध्यम और अन्य अंगों के सम्बन्ध में भी किन्हीं सैद्धान्तिक आदर्शों का स्वरूप उस समय निश्चित रूप से होगा परन्तु उक्त सामग्री अब उपलब्ध नहीं है। साथ ही होमर के साहित्य सिद्धान्तों या साहित्य विषयक मान्यताओं का भी कोई विवरण स्वतंत्ररूप से उपलब्ध नहीं होता और 'इलियड' एव 'आडेसी' नामक दोनों महाकाव्यों का तद्युगीन

Scanned with CamScanner

सभ्यता एवं संस्कृति के परिचय की दृष्टि से ही असाधारण महत्व माना
इतना होते हुए भी होमर का यह मत अवश्य प्रचलित है। काव्य का
प्रदान करना होना चाहिए।

होमर के पाश्चात्य हेसियड, पिंडार, गोर्जियास और एरिस्टोफेनीज
विचारकों ने भी प्राचीन यूनानी आलोचना साहित्य को विकसित किया है।
यूनान के प्राचीन चिन्तकों में सुकरात (साक्रीटीज का विशिष्ट स्थान माना
सुकरात का समय 469 ई० पू० से लेकर 399 ई० पू० तक माना गया है।
साहित्य के विविध अंगों में एवं सुकरात के मंतव्य मूलाधार और चिन्तनात्मक
के रूप में मान्य है। यद्यपि सुकरात ने किसी कृति की रचना नहीं की और
किसी कृति का उल्लेख भी नहीं मिलता है पर उसकी वैचारिक स्थापनाओं के
उसके शिष्यों और परवर्ती विचारकों के ग्रंथों में अवश्य मिलते है। सुकरात ने नीति, ज्ञान, धर्म, दर्शन और राजनीति आदि के सम्बन्ध में विचार
किये हैं तथा यूनान में नीतिपरक आलोचक के विकास का श्रेय सुकरात को ही
जाता है। यहाँ यह स्मरणीय है कि सुकरात के ही प्रमुख शिष्य प्लेटो को
काव्यशास्त्र का आदि प्रवर्तक कहा जाता है और यहाँ उसके सिद्धान्तों का कुछ
परिचय देना आवश्यक है।

पाश्चात्य आलोचना के आदि आचार्य प्लेटो—प्लेटो का समय 427 ई०
से 348 ई० पू० तक माना जाता है और यूनान के प्राचीन दार्शनिकों एवं
मर्मज्ञों में उसका सर्वोच्च स्थान है। वास्तव में प्लेटो दर्शनशास्त्र के प्रणेता
और उसने तीस से अधिक संवादों या कथोपकथनों (वार्तालाप) के माध्यम से
की चर्चा की रचना की थी इन संवादों में से फेडरस (Phaedrus) इओन
और रिपब्लिक (Republic) नामक संवादों में प्लेटो के आलोचना सम्बन्धी
भी हैं तथा उनके आधार पर प्लेटो का काव्य-शास्त्रीय दृष्टिकोण स्पष्ट किया
सकता है। यद्यपि प्लेटो ने आलोचना के सम्बन्ध में क्रमबद्ध रूप से विचार व्यक्त
किये और प्रायः स्फुट रूप में ही उसके आलोचनात्मक विचार प्राप्त होते हैं तथा
किसी अंतिम निर्णय पर भी नहीं पहुँचते लेकिन इतना होते हुए भी प्लेटो की
विषयक मान्यताएँ इतनी गंभीर और मौलिक हैं कि पाश्चात्य काव्यशास्त्र का आरंभ
उन्हीं से माना जाता है।

प्लेटो का काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण—प्राचीन यूनान में जिसे अनुकरण
सिद्धान्त का प्रवर्तन होमर ने किया था उसका सबसे प्रबल तुष्टीकरण प्लेटो ने कि
और इसी सिद्धान्त को आधार बनाकर उसने विविध विषयक विचार व्यक्त किये हैं
इस प्रकार प्लेटो का दार्शनिक सिद्धान्त यह था कि 'जो कुछ भी हम इस पार्थिव जगत
में देखते, सुनते और अनुभव करते हैं, उन सबका मूलरूप स्वर्ग में स्थित है। मनुष्य
की आत्मा जब स्वर्ग में रहती है तो इन मूल रूपों को सहज ही पहचानती है और
उन्हीं के सम्पर्क में रहती है परन्तु जब हम इन मूल रूपों का अनुकरण कर
पार्थिव जगत् में प्रवेश करते हैं तो हमें उसकी छायामात्र ही मिलेगी और जब साहित्य
कार इनका अनुकरण अपनी रचनाओं में करेगा तो वह सत्य (मूल रूपों से और
दूर जा पड़ेगा। काव्य इस दृष्टिकोण से हमें बहुत दूर ले जाता है और उसमें
सत्यानुभूति असंभव होगी।' इस प्रकार प्लेटो की दृष्टि में काव्य या साहित्य

Scanned with CamScanner

आदर्श, नागरिक के सत्य की शिक्षा नहीं प्रदान करता और इसीलिए प्लेटो ने अपने आदर्श में साहित्यकार या कवि को कोई स्थान नहीं दिया ।

अपने 'अयोन' नामक ग्रन्थ में प्लेटो ने अवश्य कवि का स्वरूप-विवेचन किया है और उसका कहना है कि 'कवि का मन सूक्ष्म, चलायमान और पवित्र वस्तु है, और तब तक युक्तिहीन है जब तक कि उसे दैनिक प्रेरणा नहीं मिलती और स्वयं इन्द्रियशून्य और बुद्धि-विहीन नहीं हो जाता । जब तक वह इस अवस्था को प्राप्त नहीं होता तब तक वह शक्तिहीन है और अपनी गूढ़ोक्तियाँ कहने में असमर्थ है ।' इसी प्रकार प्लेटो ने 'रिपब्लिक' नामक ग्रन्थ में कविता एवं चित्रकला को समकक्ष माना है और काव्य का वर्गीकरण कर उसे गीत, नाटक एवं महाकाव्य नामक तीन भागों में विभक्त किया है । साथ उसने नाटक की चर्चा करते हुए ट्रेजिडी और क़ामेडी की भी चर्चा की है पर उसने ट्रेजिडी को महाकाव्य की अपेक्षा हीन माना है ।

सामान्यतया विचारक प्लेटो के काव्य सम्बन्धी विचारों की विवेचना करते समय उसके द्वारा कविता पर लगाए गए आक्षेपों का अवश्य उल्लेख करते हैं और डॉ० रामदत्त भारद्वाज का यही मत है कि "प्लेटो ने कविता पर दो आक्षेप किये हैं । प्रथमत: उनके अनुसार, कला प्रकृति की अनुकृति है । बुद्धिपूर्ण अनुकृति के द्वारा प्रकृत वस्तुओं की नकल यथावत् सी होती है । चित्रकला इसका अच्छा उदाहरण है उनके तनुसार यह दृश्यमान संसार (अर्थात् व्यवहार जगत्) वास्तविक वैचारिक (आइडियल) जगत् की प्रतिकृति है । उदाहरणस्वरूप जिस कुर्सी पर आप बैठे हुए हैं इसका निर्माण किसी बढ़ई ने उस आदर्श (नमूने) के अनुसार किया जो उसको दिया गया था । प्लेटो का तर्क इस प्रकार है यह व्यवहार जगत् वास्तविक जगत् की नकल है । चित्र के द्वारा उसकी नकल और भी अधिकतर नकल है । नकल तो नकल ही होती है । चित्रकला नकल की नकल है अर्थात् दुगुनी नकल है कोई भी कला, नकल की नकल होने के कारण हेय है अतएव हमें उसकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए । द्वितीयत: कविता शृंगार और सौन्दर्य की भावना के कारण श्रेय से दूर रहती है, और करुणा आदि कटुभाव भी चित्र को विगलित या उद्वेलित करते हैं । प्लेटो के लिए काव्य आकर्षक, सौन्दर्यपूर्ण, प्रेम या पवित्र होना कोई मूल्य नहीं रखता । उसके लिए साहित्य (या कला) का मूल्य कब तक है, जब तक मनुष्य को अच्छा नागरिक बनाने के लिए उपयोगी सिद्ध होता है । अतएव होमर तथा इलियड के काव्यों का बहिष्कार होना चाहिए और त्रादश एवं कामद का निष्कासन भी । किन्तु यदि किसी काव्य में देवताओं की स्तुतियाँ अथवा श्रेष्ठ व्यक्तियों की प्रशस्तियाँ हों, तो उसे स्वीकार कर लेना चाहिए ।"

प्लेटो के उक्त दृष्टिकोण से यही स्पष्ट होता है कि उसके अनुसार काव्य या तो मिथ्या है या कदाचार का प्रेरक है, अतएव हेय है पर यहाँ पर यह समझना उचित न होगा कि प्लेटो जो स्वयं कवि था, श्रेष्ठ कवि या श्रेष्ठ कलाकारों का विरोध था । सत्य तो यह है कि प्लेटो काव्य का उद्देश्य केवल आनन्द प्रदान करना ही नहीं मानता और वह तो साहित्य का मूल्यांकन सत्य से ही करने का पक्षपाती था । उसने कविता का मुख्य प्रयोजन मानव चरित्र को प्रभावित करना और उसका निर्माण करना तथा आत्मा को प्रच्छन्न शक्तियों को प्रकाश में लाना ही स्वीकार किया है तथा कविता के माध्यम से मनुष्य को अपना जीवन श्रेष्ठतम बनाने और जगत् के पुनर्निर्माण

हेतु योग्य बनाने की ओर भी संकेत किया है। इस प्रकार प्लेटो ने काव्य कला को कठोर संयम और आत्मनियन्त्रण पर आधारित माना तथा उसकी कसौटी पर सख बतलायी है। अतएव प्लेटो की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन यह है कि उसने मनुष्य को चिंतन की दिशा में प्रेरित कर उसे आलोचना प्रणाली की ओर उन्मुख किया है।

प्रश्न—अरस्तू का परिचय देते हुए उसकी सैद्धान्तिक उपलब्धियों का विवेचन कीजिए।

अरस्तू (अरिस्टॉटिल)--यद्यपि प्लेटो के पश्चात् आइसॉक्रेटीज, ईस्किनस